अध्यापक शिक्षा में प्रतिबद्धता

विवेक नाथ त्रिपाठी*

शिक्षा का केंद्र अध्यापक होते हैं और अध्यापकों की गुणवत्ता प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिबिंबित होती हैं। जहाँ तक भवन प्रयोगशाला, पुस्तकालय व अन्य आधारभूत सुविधाओं का प्रश्न है, वह अधिकांश संस्थाओं में लगभग एक जैसी रहती है लेकिन कुछ संस्थाओं की प्रतिष्ठा अधिक होती है जिससे आकृष्ट होकर छात्र वहाँ पर प्रवेश लेते हैं। ये अंतर शिक्षकों की गुणवत्ता के कारण होता है। वर्तमान में अध्यापक शिक्षा की समीक्षा आवश्यक है। विद्यालय शिक्षा में गुणवत्ता के विकास के लिए अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता लाना आवश्यक है और गुणवत्ता केवल संसाधनों की उपलब्धता से नहीं लाई जा सकती बल्कि उन मूल्यों के संरक्षण की आवश्यकता को महसूस करने से लाई जा सकती है जिनको अपनाकर गुणवत्ता में वृद्धि हो सके। अध्यापक शिक्षा में शिक्षकों एवं शैक्षिक प्रशंसकों की प्रतिबद्धता, समाज की प्रतिबद्धता, विद्यार्थियों की प्रतिबद्धता, एवं वर्तमान स्थिति में अध्यापक शिक्षा में प्रतिबद्धता लाने के लिए सुझाव देने का प्रयास प्रस्तुत लेख में किया गया है।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। किसी भी जनतांत्रिक समाज में शिक्षा का पहला दायित्व यह है कि वह समाज में इस प्रकार की वैचारिक चेतना को सजीव बनाये जिससे समाज में जन की सत्ता, धनी- निर्धन ऊँच-नीच, जेंडर, जाति और क्षेत्रियता के भेद-भावों से ऊपर स्थापित हो सके।

इस कार्य में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। राष्ट्रीय इतिहास में बहुत ऐसे अवसर आते है जहाँ हमें राष्ट्र की विभिन्नि नितियों योजनाओं एवं क्रियाओं के पुर्नमूल्याकंन की आवश्यकता महसूस होती है। साथ ही पूर्व में संचालित शिक्षा व्यवस्था, उपलब्धि की समीक्षा की जाती है ताकि भविष्य की दृष्टि एवं योजनाओं का निर्धारिण किया जा सके। अध्यापक शिक्षा एवं अध्यापकों की पूर्व में

* *सहायक आचार्य,* शिक्षा विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, 171005

स्थिति एवं वर्तमान में अध्यापक शिक्षा की समीक्षा आवश्यक है। विद्यालय शिक्षा में गुणवत्ता केवल संसाधनों की उपलबधता से नहीं लाई जा सकती बल्कि उन मूल्यों के संरक्षण की आवश्यकता द्वारा लाई जा सकती है। जिनके उपयोग द्वारा गुणवत्ता में वृद्धि हो सके आज हमें 'मूल्य शिक्षा' को पाठ्यक्रम में रखना पड़ रहा है। कभी हमारी सभ्यता एवं संस्कृति राष्ट्र की पहचान हुआ करती थी। कभी भारत को विश्व गुरू का दर्जा प्राप्त था आज अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता की बात की जा रही है। आज शिक्षकों में वचनबद्धता, समर्पण एवं प्रतिबद्धता का अभाव है। जिन्हें गुणवत्ता में गिरावट के सबसे महत्वपूर्ण कारणों में माना जा रहा है।

हमें गुणवत्ता को बढ़ाने की आवश्यकता है। प्राचीन भारत में अध्यापकों में सर्मपण पाया जाता था आज पूरा विश्व अध्यापकों की प्रतिबद्धता एवं सर्मपण भाव को बढ़ाने एवं समर्पित अध्यापकों की खोज में लगा हुआ हैं। समाज में अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार व सैद्धांतिक अध्यापकों का अभाव है। अगर कहीं कोई अध्यापक सिद्धांतवादी मिल भी जाता है तो समाज में फ़ैली विषमताएँ उस अध्यापक को उसके सिद्धांतों से समझौता करने के लिए बाध्य कर देती हैं। महात्मा गांधी ने अध्यापकों के संबंध में कहा है कि 'शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के हृदय से संबंध स्थापित करना चाहिए।' एक शिक्षक को संप्रेषण कक्ष में जितना समय देना होता है उससे कहीं ज़्यादा उसे कक्षा से बाहर समय देने की आवश्यकता है परंतु वर्तमान में शिक्षकों के पास कक्षा से बाहर विद्यार्थियों को देने के लिए समय नहीं है, जो छात्र के नैतिक एवं चारित्रिक विकास में सबसे बड़ी बाधा बन रहा है।

अध्यापक शिक्षा में अध्यापकों की प्रतिबद्धता

शिक्षा का केंद्र अध्यापक होते हैं और अध्यापकों की गुणवत्ता प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिबिंबित होती है। जहाँ तक भवन, प्रयोगशाला पुस्तकालय व अन्य आधारभूत सुविधाओं का प्रश्न है, वह अधिकांश संस्थाओं में लगभग एक जैसी रहती हैं लेकिन कुछ संस्थाओं की प्रतिष्ठा अधिक होती है, जिससे आकृष्ट होकर छात्र वहाँ पर प्रवेश लेते हैं ये अंतर शिक्षकों की गुणवत्ता के कारण होता है। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग ने शिक्षक को राष्ट्रीय विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कारक माना है। विवेकानन्द ने कहा है कि "शिक्षक बनने से आसान है मृत्यु का आलिंगन कर लेना, जीव मुक्त हो जाना।" परंतु आज सबसे आसान काम है शिक्षक बनना (विवेकानन्द साहित्य,पृष्ठ 27-30) उन्होंने कहा है कि "जो व्यक्ति जीवमुक्त हो जाता है वह इस संसार को स्वप्न स्वरूप मानता है।"

संसार नामक कोई स्वप्न था जो अब नहीं है, लेकिन शिक्षक को यह ज्ञान होता है की जगत स्वप्न स्वरूप है उसको यहाँ पर रहना है व कार्य भी करना है। हर एक के लिए आचार्य होना संभव नहीं है। आचार्य तो वह है जिसके द्वारा दैवीय भाक्ति कार्य करती है। शिक्षक वह है जो भविष्य के अंदर अध्यात्मिक शक्ति का संचार कर दे। शिक्षक की प्रतिबद्धता शिक्षक के समस्त आयामों को प्रभावित करती है। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि शिक्षक की अध्यापक शिक्षा के विभिन्न

आयामों के प्रति प्रतिबद्धता होगी तो अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता स्वत: निर्मित हो जाएगी। प्राचीन समय में भारत कभी विश्व गुरू हुआ करता था यहाँ वचन बद्धता को प्राण से भी महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता था। नालंदा तक्षशिला, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय विश्व में शिक्षा का परचम लहरा रहे थे। आज हमारे देश में शिक्षकों की प्रतिबद्धता में दिनोंदिन कमी आती जा रही है। आज शिक्षकों में अनुशासन का अभाव है। उनमें शैक्षिक कार्यों के प्रति प्रतिबद्धता की कमी है और वे अधिकांशत: दूसरे कार्यों में अधिक रूचि दिखाते हैं। शिक्षक प्राय: कक्षा में अध्यापन कार्यो का निर्वाहन व कुछ शोध छात्रों का निर्देशन, मार्गदर्शन कर अपने कर्तव्य को संपन्न मान लेते हैं, जबकि शिक्षकों को समाज सुधारक की संज्ञा दी जाती है।

महात्मा गांधी ने कहा है कि 'एक शिक्षक का दायित्व कक्षा में विद्यार्थियों के लिए जितना हो उससे कहीं ज़्यादा कक्षा के बाहर है।'

वालिया (2003) ने शिक्षकों में प्रतिबद्धता से संबंधित एक शोध किया जिसमें साक्षात्कार के दौरान शिक्षकों ने कुछ इस तरह के विचार प्रस्तुत किए हैं।

- "मैंने कभी नहीं सोचा था की शिक्षण को जीवन पर्यन्त कैरियर के रूप में चुनुँगा। मैं तो लेखक बनना चाहता था, अचानक ही शिक्षक बन गया।"
- "मैं अपने जीवन में कभी शिक्षक नहीं बनना चाहता क्योंकि शिक्षकों का वेतन और सेवा-लाभ कम हैं। मैं चाहता हूँ कि भविष्य में अपने व्यवसाय को परिवर्तित कर लूँ।
- "मैं शिक्षक नहीं बनना चाहता था, मैं राजनीति के लिए शिक्षक बना हूँ।"
- "अगर मुझे अवसर मिलेगा तो मैं दूसरे प्रोफ़ेशन में भी जा सकता हूँ।"
- "मेरे अभिभावक अधिक खर्चे वाला पाठ्यक्रम जैसे चिकित्सा, का अध्ययन नहीं करा सकते इसलिए मैंने शिक्षक बनने का निर्णय लिया। अवसर मिलने पर प्रोफ़ेशन परिवर्तित कर लूँगा।

शिक्षको में प्रतिबद्धता के अभाव के कुछ कारण हो सकते हैं- जैसे पारिश्रमिक का कम होना, सीखने में रूचि का अभाव आदि परंतु एक प्रतिबद्ध शिक्षक की भूमिका केवल विद्यार्थी तक ही सीमित नहीं है बल्कि मानवता के भविष्य, देश के भविष्य तथा विश्व के विकास के रूप में भी होती है देश का भविष्य भी शिक्षक की प्रतिबद्धता से प्रभावित होता है। हमें इस वचनबद्धता को बढ़ाना होगा प्रत्येक शिक्षक को अपनी अकादमिक प्रतिबद्धता स्थापित करनी होगी उसे अपने तात्कालिक प्रलोभनों को छोड़ना पड़ेगा। जब किसी शिक्षक की प्रशंसा की जाती है तो उसका आत्मविश्वास और Commitment बढ़ता है।

भारतीय परंपरा में व्यक्ति की शिक्षा माता-पिता और शिक्षक तीनों का समूचित उत्तरदायित्व माना गया है। माता-पिता और आचार्य ये तीनों जब अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं तभी बच्चे योग्य नागरिक बनते हैं। जनतंत्रात्मक दर्शन की सफ़लता का दायित्व अध्यापक के ऊपर भी निर्भर करता है बालकों में अपने कर्तव्य के प्रति आस्था, अथवा अविश्वास, आदर अथवा अनादर की भावना उत्पन्न करने की ज़िम्मेदारी अध्यापक पर है। शिक्षा ही व्यक्तियों को उनके कर्तव्य और ज़िम्मेदारियों को समझने के योग्य बना सकती है। शैक्षणिक आदर्श स्थापित करने का

कार्य अध्यापक का होता है। शिक्षक को भावी पीढ़ी और समाज के विकास लिए शारीरिक, बौद्धिक, और नैतिक क्षमताओं का बखूबी उपयोग करना चाहिए। कोठारी आयोग ने कहा है कि 'राष्ट्र के किसी व्यक्ति का स्तर उस राष्ट्र के शिक्षक के स्तर से ऊँचा नहीं उठ सकता।' आज शिक्षक शिक्षा के माध्यम से हम कैसे शिक्षक तैयार कर रहें है यह विचार करने का विषय है। शिक्षक शिक्षा को पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या, शिक्षण विधि तथा आकलन प्रक्रिया में बदलाव की ज़रूरत है। एन.सी.एफ.टी. 2009 में शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्या में बदलाव के अनेक सुझाव दिए गए हैं। परंतु वे शिक्षक शिक्षा संस्थानों द्वारा आज तक भी लागू नहीं किए गए हैं। भारत में शिक्षक शिक्षा का अनियोजित विकास एवं अनियंत्रित प्रसार आज एक बड़ी चुनौती है - शिक्षक शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए चार तत्व *शिक्षक पाठ्यक्रम, मूल्याकन* एवं *संसाधन* महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं इन तत्वों में सबसे महत्वपूर्ण तत्व शिक्षक है। इसमें बदलाव कर अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाई जा सकती है। मूल्य– आधारित अध्यापक शिक्षा एवं शिक्षकों का विकास किया जाना चाहिए।

समाज की प्रतिबद्धता

विकासशील समाज में शिक्षक की भूमिका को कक्षा तक सीमित नहीं रखना चाहिए। यद्यपि समाज एक वृहत संप्रत्य है। विवेकानन्द ने कहा है कि 'यदि समाज में सत्यता व निस्वार्थ भाव से क्रियाओं का संपादन नहीं किया जा रहा हो तो शिक्षक को उस समाज को त्याग देना चाहिए।' समाज में तो सबकुछ समाहित होता है। समाज से शिक्षक को और शिक्षक से समाज को बहुत अपेक्षाएँ होती हैं। शिक्षक को समाज सुधारक की संज्ञा दी जाती है और समाज को शिक्षक का संरक्षक माना जाता है। आज समाज ने अध्यापक शिक्षा में हस्तक्षेप को लगभग त्याग दिया है, इस प्रकार अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए संचालित विभिन्न संस्थानों में क्या हो रहा है, उनकी समस्याए क्या है इस पर समाज कोई प्रतिक्रिया नहीं करता। समाज की जो प्रतिबद्धता, कार्य शैक्षिक संस्थानों, प्रशिक्षण संस्थानों, विश्वविद्यालयों पर निगरानी रखना हैं तथा समय-समय पर संबंधितों को चेतावनी देना था वह अब नहीं हो पा रहा है। बल्कि समाज के कुछ तथा कथित व्यक्तियों द्वारा शिक्षकों को बदनाम तथा अपमानित किया जा रहा है। मेरा यह मानना है कि जिस दिन समाज अपनी प्रतिबद्धता अध्यापक शिक्षा के प्रति प्रदर्शित करेगा उस दिन अध्यापक शिक्षा अपनी प्राचीन गरिमा को प्राप्त कर लेगी और भारत पुन: विश्व गुरू कहलाने की श्रेणी में अग्रसर होगा। अत: समाज को शिक्षकों की सुरक्षा, संरक्षा और सम्मान के लिए प्रतिबद्ध होना पड़ेगा उसके प्रति श्रद्धा, नम्रता विनम्रता व्यक्त करनी पड़ेगी तभी अध्यापक शिक्षा के प्रति समाजिक प्रतिबद्धता स्थापित हो सकेगी।

हमें अध्यापक शिक्षा को अति संवेदनशील अनुभाग के रूप में देखना होगा क्योंकि शिक्षक को राष्ट्र निर्माण, समाज सुधारक की संज्ञा दी जाती है। अगर शिक्षकों के प्रशिक्षण में कहीं कोई कमी या त्रुटि रह गयी तो दूसरी समस्त पीढ़ी प्रभावित होगी देश की पहचान वहाँ पर कार्यरत् शिक्षकों की पहचान पर निर्भर करती है।

अध्यापक शिक्षा में शैक्षिक प्रशंसकों की प्रतिबद्धता

अध्यापक शिक्षा में केंद्रीय प्रशासन की भूमिका हो या राज्य प्रशासन की इन प्रशासनों में कार्यरत् शैक्षिक प्रशासकों, एवं अनुगामक एवं नियंत्रण रखने वाली संस्थाओं जैसे, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एन.सी.टी.ई.) भारतीय पुर्नवास परिषद (आर. सी.आई.) एन.सी.ई.आर.टी., के अंतर्गत संचालित अध्यापक शिक्षा विभाग इन सबका महत्वपूर्ण कार्य है अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए नीतियों का निर्माण करना उनका पालन करना तथा अध्यापक शिक्षा में कार्यरत विभिन्न संस्थाओं को संसाधन उपलब्ध कराना तथा समय-समय पर संचालित पाठ्यक्रम, नीतियों एवं कार्यक्रमों में परिमार्जन करना तथा मूल्याकंन करना है।

शैक्षिक प्रशासकों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे प्रशिक्षण संस्थानों को राजनैतिक हस्तक्षेप से बचाएँ तथा शिक्षक एवं विद्यार्थियों को उनकी भूमिकाओं के निर्वहन में सहयोग व उन्हें अभिप्रेरित करें परंतु वास्तविकता क्या है यह तो विभिन्न शैक्षिक, संस्थाओं में कार्यरत सदस्यों को स्वयं पता होगा कि वे जिस संस्था के सदस्य हैं क्या वे उस संस्था व अपने पद का उपयोग अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए कर रहे हैं या राजनैतिक लाभ के लिए। सबको अवगत होगा की जस्टिस जे.एस.वर्मा की अध्यापक शिक्षा में रिर्पोट का अनुपालन माननीय सर्वोच्च न्यायालय की दिशा निर्देश में किया जा रहा है। आज शैक्षिक प्रशासक अपने व्यक्तिगत लाभ एवं वर्चस्व को लेकर अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित कर रहे हैं। अध्यापक शिक्षा में कार्यरत शैक्षिक प्रशासक, विभिन्न प्रशिक्षण संस्थान में कार्यरत सदस्य उन संस्थाओं में राजनैतिक हस्तक्षेप का विरोध करते हुए अपने व्यवसाय के मूल्यों कर्तव्यों व गुणवत्ता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता अपने पद और राजनैतिक लाभ को छोड़कर प्रदर्शित करते हैं तो अध्यापक शिक्षा में प्रतिबद्धता को बढ़ाया जा सकता है।

विद्यार्थियों की प्रतिबद्धता

किसी भी शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग विद्यार्थी होता है यह एक ऐसा केंद्र होता है जिसके चारों तरफ़ शिक्षा के विभिन्न आयाम घूमते रहते हैं। यह शिक्षा व्यवस्था का अंतिम उत्पाद होता है। अध्यापक शिक्षा में इनकी महत्ता और भी बढ़ जाती है। क्योंकि अध्यापक शिक्षा में जो विद्यार्थी होते हैं वे भविष्य में शिक्षक बनने वाले होते हैं अत: उनका चुनाव उनकी दक्षता, क्षमता, और व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता को ध्यान में रखकर करना पड़ता है। साथ ही उनकी प्रतिबद्धता जहाँ एक ओर अन्य छात्रों की भाँति कक्षाओं में नियमित व समयबद्ध उपस्थिति ज्ञान अर्जन, शिक्षकों के प्रति सम्मान, अनुशासन में प्रदर्शित होती है। वहीं दूसरी ओर अध्यापक शिक्षा के विभिन्न आयामों के प्रति भी प्रतिबद्धता व्यक्त करनी पड़ती है परंतु दूसरी ओर इन विद्यार्थियों की प्रतिबद्धता में कमी भी दिखाई पड़ती है। जैसे, निरन्तर मूल्यों में कमी, अध्ययन के प्रति रूचि का अभाव, जागरूक नागरिक के गुणों का विकास न होना, शिक्षकों का सम्मान न करना, शैक्षणिक

कार्यों में राजनैतिक हस्तक्षेप इत्यादि-इत्यादि। अत: विद्यार्थियों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने दायित्वों को पहचानें उनका निर्वहन करें और जिस संस्था में अध्ययन कर रहे हैं उस संस्था के प्रति संस्था शिक्षकों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता स्थापित करें क्योंकि प्रतिबद्धता प्रक्रिया और परिणाम दोनों होती है। दूसरी तरफ़ समाज, शिक्षक एवं शैक्षिक प्रशासकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे विद्यार्थियों की भावनाओं, अधिकारों का सम्मान करें तथा उन्हें उनके दायित्वो एवं कर्तव्यों का बोध कराने के लिए समय-समय पर विचारों एवं मूल्यों को ध्यान में रखते हुए संगोष्ठियों का आयोजन, जागरूकता तथा जबाबदेही इत्यादि विषयों पर परिचर्चा करें। अत: कहा जा सकता है विद्यार्थियों की प्रतिबद्धता बढ़ाने के प्रयास निरंतर होने चाहिए।

अध्यापक शिक्षा में प्रतिबद्धता लाने के लिए सुझाव

वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी का शिक्षक दिवस पर देश को संबोधन का मूल उद्देश्य शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को उनके कर्तव्यों, दायित्वों को बोध कराना था क्योंकि बहुत समय पहले से ऐसा लग रहा है कि शिक्षक अपने कर्तव्यों को भूल गए तथा विद्यार्थी अपने दायित्वों को। अपने समस्त संबोधन में प्रधानमन्त्री द्वारा किसी भी कार्य की सफ़लता के लिए उस कार्य से जुड़े प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सभी सदस्यों एवं देश के विकास से संबंधित कार्यक्रमों को जन आंदोलन बनाने की बात कही जाती है। ठीक उसी प्रकार अध्यापक शिक्षा में प्रतिबद्धता लाने के लिए एक मुहीम, एक जन आंदोलन चलाने की आवश्यकता है। सोते को जगाने के लिए उसके कर्तव्यों का बोध कराने की आवश्यकता है और इस आंदोलन में शैक्षिक प्रशासक, अध्यापक, समाज, एवं विद्यार्थी वर्ग को सम्मिलित किया जाए उन्हें उनके कर्तव्यों की शपथ दिलाई जाए और उस शपथ को कानूनी जामा पहनाया जाए उसका पालन न करने की स्थिति में दंडात्मक कार्यवाही की जाए। हमें इस दिशा में विचार करना होगा और संबंधित सभी के विचारों में परिर्वतन लाने के लिए उनकी मनोस्थिति को जानना होगा। दूसरी तरफ़ इस प्रतिबद्धता का संबंध प्रत्येक व्यक्ति एवं उसकी इच्छा पर निर्भर करता है और दूसरे के विचारों को थोपा नहीं जा सकता हमें मॉडल प्रस्तुत करना होगा ताकि दूसरा खुद अपने विचारों एवं कर्तव्यों में परिवर्तन लाने का प्रयास करेगा जो स्थायी होगा। इसके अतिरिक्ति प्रतिबद्धता में होती कमी या गिरावट के कारणों का पता लगाकर उसे दूर करने की आवश्यकता है, कुछ सुझाव इस प्रकार हैं।

- प्रतिबद्धता में कमी हमेशा व्यक्तिगत कारणों से नहीं होती कुछ सामाजिक एवं आर्थिक कारणों से होती है। हमें उस प्रोफ़ेशन की वास्तविक स्थिति का आकलन कर सकारात्मक दिशा में प्रयास करने चाहिए।
- अध्यापक शिक्षा में कार्यरत् शैक्षणिक संस्थाओं को चाहिए कि वे अपने संस्थानों में ऐसे शिक्षकों को तैयार करें जो पूर्ण रूप से अपने कर्तव्यों का पालन करें तथा समाज में एक प्रतिबद्ध शिक्षक के रूप में अपनी पहचान बना सकें।

- हमें शिक्षकों के हितों के प्रति समुदाय एवं समाज के विकास को आगे लाना होगा। कार्य के लिए अच्छा वातावरण तथा क्रियाओं के संपादन एवं नितियों के निर्माण में अध्यापकों की सहभागिता बढ़ाकर उनके अंदर प्रतिबद्धता लाने के सफ़ल प्रयास भी करने होंगे।
- हमें इस पर विचार करने की आवश्यकता है कि अध्यापकों की प्रतिबद्धता कैसे बढ़ाई जा सके। अन्य क्या रणनिति अपनाई जाए जिससे अध्यापकों में प्रतिबद्धता के स्तर को बढ़ाया जाए तथा कार्य के प्रति असंवेदनशीलता की मात्रा में कमी लाई जाए अर्थात संवेदनशीलता बढ़ाने की आवश्यकता अधिक है।
- शिक्षकों द्वारा केवल अपने शैक्षणिक कार्यों का संपादन कर अपने कर्तव्य को पूरा मान लिया जाता है। हमें उनके कार्यों एवं दायित्वों के प्रति उन्हें जागरूक बनाना अत्यंत आवश्यक है।
- मूल्यों के अभाव, एवं कारणों, जवाबदेही की कमी एवं आत्म चेतना में कमी के कारणों का पता लगाया जाए तथा मूल्यों के संरक्षण, जवाबदेही का निर्धारण किया जाए जिससे प्रतिबद्धता में सकारात्मक सुधार लाया जा सके।
- प्रतिबद्धता को मूलत: आत्मा की आवाज़ एवं आत्म चेतना से जोड़ा जाता है यदि एक शिक्षक को यह अहसास हो कि उसके कर्तव्य क्या हैं उसके दायित्व क्या हैं तो उस शिक्षक में प्रतिबद्धता स्वत: निर्मित हो जाती है। हमें उस अहसास को बढ़ाने की आवश्यकता है।
- प्रतिबद्धता क्या है इसका महत्व क्या है इससे संबंधित अनेक प्रकार के व्यक्तिगत एवं सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए तथा स्वयं जागृत होने के साथ-साथ दूसरे को भी जगाने का प्रयास किया जाए।
- हमें प्रतिबद्धता को पढ़ाने की आवश्यकता नहीं हमें उसे अपनाने की आवश्यकता है।
- शैक्षिक प्रशासकों को चाहिए की प्रतिबद्धता को शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में सम्मिलित करें उचित तकनीकी एवं रणनितियों का प्रयोग कर इसमें वृद्धि लाने का प्रयास करें। अधिकतम शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान सैद्धांतिक एवं अभ्यास शिक्षण में अवधि को बढ़ाकर गुणवत्ता लाने का प्रयास करते हैं जबकि इन विषयों से ज़्यादा प्रतिबद्धता को कैसे बढ़ाया जाए इस पर ध्यान देने की अधिक आवश्यकता है।
- अनुभव–आधारित प्रतिबद्धता का प्रयोग किया जाए। समुदाय की सहभागिता बढ़ाते हुए क्रियात्मकता, तथा नियमित सहयोग जैसे मूल्यों को क्रियाओं के माध्यम से संपादित किया जाए जिससे प्रतिबद्धता का निर्धारण किया जा सके।
- कुछ प्रतिबद्धता से परिपूर्ण एवं कर्तव्य का पालन करने वाले अध्यापकों का चयन किया जाए तथा उनका विद्यार्थियों एवं समाज में प्रत्यक्ष रूप से अंत:क्रिया कराई जाए।
- विद्यार्थियों में प्रतिबद्धता बढ़ाने के लिए उनके प्रति संवेदनशीलता सहयोग उनके सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जाए एवं उनके अंदर आत्मविश्वास एवं सम्मान के विकास के लिए प्रयास किया जाए।

- पाठ्य सहगामी क्रियाओं का प्रतिबद्धता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है अत: उनका आयोजन विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए किया जाए।
- समस्त शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों ,प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रतिबद्धता के महत्व को बताया जाए तथा पाठ्यक्रम में प्रतिबद्धता को उचित स्थान दिया जाए।
- प्रतिबद्धता पर अच्छी अधिगम सामग्री उपलब्ध कराई जाए जैसे समर्पित अध्यापकों की जीवनी, कहानियाँ इत्यादि।
- गाँव स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक अच्छे शिक्षकों की पहचान की जाए तथा उनको राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जाए।
- शैक्षिक प्रशासकों से यह अपेक्षा की जाए कि वे अच्छे शिक्षकों के कार्यों एवं उनके कार्यों की प्रभावात्मकता का मूल्यांकन करें तथा उनकी उपलब्धता एवं प्रतिबद्धता के आधार पर नियुक्ति एवं पदोन्नति जैसे कार्यों का संपादन करें जिससे प्रतिबद्धता को बढ़ाया जा सकता है।
- प्रतिबद्धता एवं कर्तव्य निर्वहन न करने या अभाव के कारण की खोज की जाए तथा उसके निवारण के लिए तत्काल समस्या समाधान समिति की व्यवस्था की जाए।
- शैक्षिक मामलों से संबंधित निर्णयों समस्याओं एवं कानूनी हस्तक्षेपों, शिक्षकों, विद्यार्थियों के लिए एक अलग से फ़ास्ट ट्रैक न्यायालय की स्थापना की जाए जिसमें केवल शैक्षणिक संस्थानों शिक्षकों एवं विद्यार्थियों से संबंधित शैक्षणिक समस्याओं का विस्तारण किया जाए तथा समाज में एक विश्वास हासिल किया जाए।
- प्रतिबद्धता के लिए जागरूकता, कार्यक्रम कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों का आयोजन किया जाए।
- मूल्यों के संरक्षण और पोषण को बढ़ावा दिया जाए।
- प्रतिबद्धता के विभिन्न पक्षों को व्यवहार एवं अभ्यास में लाया जाए।
- अध्यापक शिक्षा से संबंधित नियमों मूल्यों एवं जवाबदेही का निर्धारण किया जाए।
- कार्य करने के लिए शैक्षाणिक एवं शांत वातावरण प्रदान किया जाए।
- अध्यापक को उनके दायित्वों, कर्तव्यों का बोध कराया जाए तथा इसके प्रति उनमें जागरूकता लाई जाए। प्रतिबद्धता से संबंधित अभ्यास कार्य पाठ्यक्रम में लाया जाए।
- शैक्षणिक प्रक्रिया के संपादन, प्रबंधन एवं पाठ्यक्रम के विकास में शिक्षकों की भूमिका को दिया जाए जिससे उनकी जवाबदेही का निर्धारण किया जा सके तथा उनकी उपलब्धि का आंकलन संभव हो सके।
- शिक्षकों को नवीन शोध एवं बौद्धिक रूप से वृद्धि करने के लिए अकादमिक स्वतन्त्रता दी जाए तथा इनके कार्यों में प्रशासनिक हस्तक्षेप को रोका जाए।
- अध्यापक चयन की प्रक्रिया में सुधार किया जाए तथा अन्य चयन में प्रतिबद्धता निर्धारण के लिए जवाबदेही भी निर्धारित की जाए।

संदर्भ

करनद्धिकर सुमन. 2003. *स्ट्रगल फॉर कमीटमेंट, इन टीचर कमीटमेंट,* वालिया के, एन.सी.ई.आर.टी., पृष्ठ 94-105.

कुमार, ललित. 2012. *शिक्षक शिक्षा एवं गुणात्मक सुधार*, भारतीय आधुनिक शिक्षा, जनवरी 2010, वर्ष 32 अंक 3, पृष्ठ 17-28.

जोशी, सुषमा. 2012. *शांति शिक्षा एवं वर्तमान अध्यापक शिक्षा में निहितार्थ*, भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष 32 अंक 3, पृष्ठ 92-95.

त्रिपाठी एस एन. 2003. *वैल्यू एजुकेशन इन टीचर कमीटमेंट*, वालिया के, एन.सी.ई.आर.टी., पृष्ठ 57-36.

देश पाण्डेय वी एस. 2003. *कैन कमीटमेंट वी लर्न, इन टीचर कमीटमेंट*, के. वालिया एन.सी.ई.आर.टी. पृष्ठ 28-38.

बंधोपाध्याय, अनु. 2006. *शिक्षक, भारतीय आधुनिक शिक्षा*, जुलाई-अक्तूबर संयुक्तांक वर्ष 25 अंक 1-2, पृष्ठ 1-5.

यादव, सतीश. 2009. *अध्यापक शिक्षा समस्याएँ एवं चुनौतियाँ*, भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष 30, अंक 2, पृष्ठ 79-85.

राव. 1985. *विद्यालयी वातावरण में शिक्षक की नैतिकता को प्रभावित करने वाले कारकों के अध्ययन के मत*

शर्मा. 2003. *सेवापूर्व तथा सेवारत अध्यापकों की भावात्मक प्रतिबद्धता का अध्ययन*

श्रीवास्तव, राजेश. 2012. *जनजातीय शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका*, भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष 32 अंक 4, अप्रैल 2012, पृष्ठ 19-25.

श्रीवास्तव, रश्मि. 2012. *शिक्षक दिवस के प्रति हमारी प्रतिबद्धता*, भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष 33 अंक 1, पृष्ठ 50-60.

सभरवाल, शोभा सी. 2009. *गुरू शिष्य संबंध आधुनिक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में*, भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष 30 अंक 2, पृष्ठ 37-40.